नवदुनिया, भोपाल
9 MAY 2017

अनिलजी सबका ध्यान रखते थे

– शिवराज सिंह चौहान

भरोसा नहीं होता है कि अनिल दवे जी अब हमारे बीच नहीं हैं। वे अद्भुत व्यक्तित्व के धनी, नदी संरक्षक, पर्यावरणविद, मौलिक चिंतक, कुशल संगठक थे। वे कल्पनाशील मस्तिष्क के धनी थे। उन्होंने अनेक किताबें लिखीं। बचपन से ही जीवन भारत माता के चरणों में समर्पित कर दिया। उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक के नाते पूरा जीवन, देश और समाज की सेवा में समर्पित कर दिया। अनिल जी को जो भी दायित्व मिला, उनको पूरा किया। वे भोपाल विभाग के प्रचारक थे और मैं उनका स्वयं-सेवक रहा। वे सबका ध्यान रखते थे। मुझे याद है कि जब मेरा एक्सीडेंट हुआ था तब उन्होंने मेरा ऑपरेशन मुंबई में डॉ. ढोलकिया के हाथों से ही करवाना सुनिश्चित किया था। सदैव कार्य में रमे रहते थे। कुशल रणनीतिकार थे। वर्ष 2003, 2008 व 2013 के विधानसभा व लोकसभा चुनाव उनकी कुशल रणनीति के कारण हम जीते, मैं यह कहूं तो अतिश्योक्ति नहीं होगी।

सदैव काम में रमे रहने वाले एवं मां नर्मदा के वे ऐसे भक्त थे कि उन्हें जब भी समय मिलता था, मैया के तट पर पहुंच जाते थे। लाइसेंस प्राप्त पायलट अनिलजी ने नर्मदा की परिक्रमा छोटे विमान से की थी। इस दौरान नर्मदा संरक्षण के लिए गांवों में संरक्षण चौपाल बैठकें की थीं। बांद्राभान में नर्मदा महोत्सव का आयोजन करते थे। मैं भी उसमें भाग लेता था। 'नमामि देवि नर्मदे' सेवा यात्रा का विचार जब मैंने उन्हें बताया था तो वे बहुत प्रसन्न हुए थे। मेरी बहुत इच्छा थी कि वे इस यात्रा में आएं और वे 9 मई को इसमें आए। मंगलवार को ही मेरी उनसे बात हुई थी। मैंने बताया कि अमरकंटक में कार्यक्रम बहुत अच्छा हुआ। मैंने उनसे कहा कि आगे की योजनाएं बनाइए। उसे मिलकर पूरी करना है। अनिल जी अब हमारे बीच नहीं हैं, सहज भरोसा नहीं होता। उनका जाना प्रदेश व देश के लिए अपूरणीय क्षति है। लेकिन व्यक्तिगत रूप से मेरी क्षति है। मैं सदमे में हूं लेकिन नियति पर किसी का बस नहीं है। उनकी वसीयत में उन्होंने लिखा कि यदि लोग नदी, तालाब का संरक्षण करेंगे तो उन्हें आनंद होगा। एक महामानव ही इस तरह की वसीयत लिख सकता है।

(मुख्यमंत्री के ब्लॉग से)